

प्रो. अनिल सहस्रबुद्धे, प्रो. डी.पी. अग्रवाल और प्रो. ममीदला जगदीश कुमार ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के 105वें स्थापना दिवस समारोह में एनईपी-2020 के कार्यान्वयन पर चर्चा की।

नई दिल्ली, 30 अक्टूबर 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के 105वें स्थापना दिवस समारोह के क्रम में, समाज कार्य विभाग ने आज विश्वविद्यालय के डॉ. एम.ए. अंसारी सभागार में 'एनईपी-2020 की संभावनाएं' विषय पर एक उच्चस्तरीय पैनल चर्चा का आयोजन किया। यह आयोजन विभाग के वार्षिक एस.आर. मोहसिनी मेमोरियल व्याख्यान श्रृंखला के क्रम में भी आयोजित किया गया था। प्रतिष्ठित पैनल में प्रोफेसर अनिल डी. सहस्रबुद्धे, अध्यक्ष, एनईटीएफ, एनबीए, एनआईआरएफ और ईसी एनएएसी; विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के पूर्व अध्यक्ष और जेएनयू के पूर्व कुलपति, प्रो. ममीदला जगदीश कुमार; और संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के पूर्व अध्यक्ष, प्रो. डी.पी. अग्रवाल, जेएमआई के कुलपति, प्रो. मजहर आसिफ़ और जेएमआई के रजिस्ट्रार, प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी की उपस्थिति में शामिल थे।

पैनलिस्टों में छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष, प्रो. नीलोफर अफजल; एनईपी एपेक्स कमेटी, जेएमआई की अध्यक्ष, प्रो. मिनी शाजी थॉमस; कार्यक्रम की संचालनकर्ता समाज कार्य विभाग की संकाय सदस्य, प्रो. अर्चना दासी और समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष, प्रो. आर.आर. पाटिल शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र कुरान की आयतों के पाठ से हुई, जिसके बाद जामिया स्कूल के छात्रों द्वारा जामिया तराना का भावपूर्ण गायन हुआ, जिसने संकाय सदस्यों और अतिथियों से खचाखच भरे सभागार में एक श्रद्धापूर्ण माहौल तैयार कर दिया।

अपने स्वागत भाषण में, जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने एनईपी मसौदा तैयार करने वाले पैनल की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की और समकालीन शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) को एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, "आज जामिया मिल्लिया इस्लामिया के लिए वास्तव में एक विशेष दिन है, क्योंकि हमारे बीच ऐसे दिग्गज मौजूद हैं जो एनईपी के प्रारूपण और कार्यान्वयन में सीधे तौर पर शामिल थे।" राजनीतिक दर्शन और विचार की जड़ों पर विचार करते हुए, प्रो. रिज़वी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि प्लेटो, सुकरात और अरस्तू के विचारों ने लंबे समय से राजनीतिक वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को प्रभावित किया है, लेकिन कौटिल्य, महावीर और बुद्ध जैसे विचारकों द्वारा प्रस्तुत महान भारतीय ज्ञान परंपराओं का अध्ययन और शोध करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। "राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारी भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) के महत्व को स्वीकार करती है और मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा देने और हमारी भाषाओं और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का आह्वान करती है।" "चीन से लेकर इराक तक कई देश अपनी भावी पीढ़ियों को अपनी मूल भाषाओं में शिक्षित करने पर गर्व करते हैं, तो भारत में हम ऐसा क्यों न करें?" उन्होंने पूछा। प्रो. रिज़वी ने कहा कि भारत की ताकत उसकी विविधता में निहित है। उन्होंने कहा कि इतिहास हमें बताता है कि, "जिन साम्राज्यों ने किसी विशेष भाषा या संस्कृति का कठोरता से पालन किया, उनका अंततः पतन हो गया। हालाँकि, भारत अपनी समावेशिता, विविधता और अपनी समृद्ध परंपराओं और संस्कृतियों के कारण ही फलता-फूलता रहा है।"

प्रो. ममीदला जगदीश कुमार ने "एनईपी: मल्टीपल एंट्री एंड एग्जिट – द स्प्रिट बिहाइंड एनईपी 2020 के पीछे की भावना" पर अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि अभूतपूर्व शोध अक्सर ऐसे वातावरण से उत्पन्न होता है जो कल्पना, आलोचनात्मक सोच और स्थापित ज्ञान पर सवाल उठाने को प्रोत्साहित करता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए शिक्षार्थियों में जिज्ञासा को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि यह एनईपी पाठ्यक्रम के चौथे वर्ष में परिलक्षित होता है जो अनुसंधान के लिए समर्पित है। गूगल की स्थापना और लॉन्च, लार्ज लैंग्वेज मॉडल एआई और फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क का उदाहरण देते हुए, प्रो. कुमार ने इस बात पर प्रकाश डाला कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दुनिया में कई महान नवाचारों के पीछे एक भारतीय है। इस हद तक उन्होंने कहा कि एनईपी "बुनियादी शोध, छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने और बहु-विषयक सहयोग के विकास" पर केंद्रित है ताकि भारतीय प्रतिभा, विशेष रूप से हमारी बड़ी युवा आबादी का विकास हो सके। उन्होंने स्नातक शिक्षा में अनुसंधान को एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि युवाओं में सबसे अधिक क्षमता है। उन्होंने यह कहते हुए समापन किया, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को लागू करने का सबसे अच्छा समय अभी है ताकि हम देश के लिए एक स्थायी, शांतिपूर्ण, स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकें।"

प्रो. डी.पी. अग्रवाल ने 'एक्रेडिटेशन एंड द रोल ऑफ टीचर्स इन ड्राइविंग द इंप्लिमेंटेशन ऑफ नेएनईपी' विषय पर बोलते हुए कहा कि शिक्षक एनईपी-2020 की सफलता के पीछे प्रेरक शक्ति हैं। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के शैक्षिक दृष्टिकोण का उल्लेख किया कि 'प्रत्येक राष्ट्र को अपने राष्ट्र के लोकाचार के आधार पर अपने लोगों को शिक्षित करने का अधिकार है', और सभी शिक्षार्थियों के लिए निरंतर पुनः-कौशलीकरण, तकनीकी एकीकरण और कौशल उन्नयन पर जोर दिया।

प्रो. अग्रवाल ने "लर्न एट योर ओन पेस" की आवश्यकता पर बल दिया, यही कारण है कि डिग्रियों में लचीलापन होना आवश्यक है और यही एनईपी के पीछे की सोच है जिसे विनियमन-मुक्त वातावरण में साकार किया जाएगा। 'जीवन के लिए शिक्षा और कौशल के लिए शिक्षा' के बीच अंतर करते हुए, प्रो. अग्रवाल ने कहा कि "एनईपी में शिक्षकों द्वारा छात्रों के मूल्य संवर्धन की आवश्यकता है और इसलिए शिक्षक ही एनईपी-2020 की वास्तविक प्रेरक शक्ति हैं"। उन्होंने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि हमारी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए मूल्य संवर्धन करना होगा। उन्होंने छात्रों की उभरती आवश्यकताओं के अनुरूप आजीवन सीखने के पारिस्थितिकी तंत्र और शिक्षण पद्धति के निर्माण का आह्वान किया, जिसमें शिक्षकों को शैक्षिक प्रक्रिया में भागीदार होना चाहिए और नैतिक और सामाजिक रूप से सक्रिय शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन करना चाहिए।

प्रो. अनिल डी. सहस्रबुद्धे ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया को एक सदी से भी अधिक की असाधारण यात्रा और ऐसे कई प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों को तैयार करने के लिए बधाई दी, जिन पर राष्ट्र को गर्व है। "रैंकिंग: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य" पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान देते हुए, उन्होंने कहा कि रैंकिंग में उतार-चढ़ाव तो होता रहता है, लेकिन शोध का मूलमंत्र और शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता अकादमिक उत्कृष्टता का आधार है। उन्होंने जेएमआई के नई तालीम से प्रेरित शिक्षा मॉडल और एनईपी के अंतःविषयक और बुनियादी शोध पर जोर के बीच समानताएँ दर्शाते हुए कहा कि "जेएमआई के 48 विभागों और 28 उत्कृष्टता एवं अनुसंधान केंद्रों के साथ बहु-विषयक पेशकशें एक ताकत और एक अवसर हैं, चुनौती नहीं।" इस लिहाज़ से, विश्वविद्यालय एनईपी को लागू करने के लिए सबसे उपयुक्त स्थिति में है।

प्रो. सहस्रबुद्धे ने शोध सुविधाओं तक चौबीसों घंटे एक्सेस, नवाचार और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने, और स्वयं, ऑनलाइन और अन्य सतत शिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों की

सहभागिता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "शिक्षकों को छात्रों का मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक होना चाहिए।"

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की एनईपी शीर्ष समिति की अध्यक्ष प्रो. मिनी शाजी थॉमस ने "नई तालीम टू एनईपी: ए ट्रांसफ़ोर्मेशनल जर्नी फ़ॉम 1920-2020 एंड बियाँड" विषय पर अपनी प्रस्तुति में, शिल्प-आधारित शिक्षा, एकीकृत व्यक्तित्व विकास और बहुभाषी सुलभता के गांधीवादी सिद्धांतों के बीच संबंधों को रेखांकित किया, जो जामिया मिल्लिया इस्लामिया की नींव में निहित थे। उन्होंने कहा कि ये आदर्श एनईपी के मूल दृष्टिकोण के साथ निकटता से जुड़े हैं। उन्होंने श्रोताओं के समक्ष एक विस्तृत पीपीटी प्रस्तुत करके जामिया मिल्लिया इस्लामिया में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम (एफवाईयूपी), मल्टीपल एंट्री-एजिट सिस्टम और अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट के सफल कार्यान्वयन पर भी प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए, कुलपति प्रो. आसिफ़ ने उन प्रतिष्ठित वक्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्हें उन्होंने वर्षों से अपना गुरु और मार्गदर्शक बताया है। उन्होंने एनईपी-2020 को उसकी सभी सिफारिशों के साथ पूरी लगन से लागू करने की जामिया मिल्लिया इस्लामिया की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने कहा, "जेएमआई एनईपी को लागू करने और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और भारत के आम लोगों के सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है।"

प्रोफ़ेसर आसिफ़ ने ज़ोर देकर कहा कि जामिया त्रिभाषा सूत्र का पालन करता है और गांधीवादी दर्शन के अनुरूप, उनका प्रशासन यह सुनिश्चित कर रहा है कि जामिया से निकलने वाले प्रत्येक छात्र के पास कोई न कोई कौशल अवश्य हो। उन्होंने आगे कहा कि जामिया को छात्र-केंद्रित होने और उनके कल्याण के लिए काम करने पर गर्व है। उन्होंने कहा कि इसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय में रैगिंग, यौन और मानसिक उत्पीड़न के मामले लगभग न के बराबर हैं।

समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर आर.आर. पाटिल ने धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी गणमान्य व्यक्तियों, संकाय सदस्यों और छात्रों के योगदान को स्वीकार किया।

समारोह का समापन समाज कार्य विभाग के प्लेसमेंट ब्रोशर के विमोचन के साथ हुआ।

इससे पहले, स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में, डॉ. ज़ाकिर हुसैन पुस्तकालय द्वारा आयोजित "सेलेब्रेटिंग फाउंडर्स एंड जामिया ऑथर्स" शीर्षक से एक पुस्तक प्रदर्शनी और जामिया लेखकों के संग्रह की ग्रंथ सूची का विमोचन किया गया।

प्रोफ़ेसर साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी